

# 4

## अमूल्य तत्त्वविचार

बहु पुण्यकेरा पुंजथी शुभ देह मानवनो मळ्यो,  
तोये अरे! भवचक्रनो आंटो नहि एक्रे टळ्यो;  
सुख प्राप्त करतां सुख टळे छे लेश ए लक्षे लहो,  
क्षण क्षण भयंकर भावमरणे कां अहो राची रहो ? १.

लक्ष्मी अने अधिकार वधतां, शुं वध्युं ते तो कहो ?  
शुं कुटुम्ब के परिवारथी वधवापणुं ए नय ग्रहो;  
वधवापणुं संसारनुं नर देहने हारी जवो,  
एनो विचार नहीं अहोहो ! एक पळ तमने हवो !!! २

निर्दोष सुख निर्दोष आनंद, ल्यो गमे त्यांथी भले,  
ए दिव्य शक्तिमान, जेथी जंजीरेथी नीकळे;  
परवस्तुमां नहि मूंझवो, एनी दया मुजने रही,  
ए त्यागवा सिद्धांत के पश्चात् दुःख ते सुख नहीं. ३

हुं कोण छुं ? क्यांथी थयो ? शुं स्वरूप छे मारुं खरुं ?  
कोना संबंधे वळगणा छे ? राखुं के ए परहरुं ?  
एनो विचार विवेकपूर्वक शांत भावे जो कर्या,  
तो सर्व आत्मिक ज्ञाननां सिद्धांततत्त्व अनुभव्यां. ४

ते प्राप्त करवा वचन कोनुं सत्य केवळ मानवुं ?  
निर्दोष नरनुं कथन मानो 'तेह' जेणे अनुभव्युं;  
रे! आत्म तारो! आत्म तारो! शीघ्र एने ओळखो,  
सर्वात्ममां समदृष्टि द्यो आ वचनने हृदये लखो. ५